षष्ठ अध्याय

नीरजा माधव के कथा साहित्य में शिल्प

साहित्य में लेखकों को अपने विचार व भाव को व्याख्यायित करने के लिए बहुत सारी विधाए और भाषाएं हैं। उसी प्रकार हिंदी में भी गद्य- पद्य की किसी भी विधा में रचनाकार रचना कर सकता है। साहित्य की कोई भी विधा हो लेखक को उस विधा में रचना करने के लिए, वह अपने विचार भाव को निरूपित करने के लिए, एक सही तरीके की आवश्यकता होती है। एक सुनियोजित तरीके से यदि प्रति रचना की प्रस्तुतीकरण हो तो यह अपना रचना निश्चय ही सफल होगी। हर रचना का एक विधान होता है उसे शिल्प विधान कहते हैं। रचना की बुनावट ही शिल्प है। किसी भी रचना के भाव की अगर व्याख्या करें तो वह भाव पक्ष कहा जाता है और कला पक्ष की बात करें तो उसे शिल्प - विधान कहा जाता है।

" शिल्प अथवा रचना का संबंध उस परिणति से है, जो कृति की सभी रचना विधान तत्वों के सहयोग से कृतिकार की प्रतिभा द्वारा प्राप्त होती है। अंग्रेजी का टेकनीक शब्द इसके सर्वाधिक निकट है। यद्यपि 'मैकनिक्स' शब्द से भी शिल्प विधि का ही बोध होता है।, पर इसके साथ एक विशेष प्रक्रिया का भाव लगा है जो शिल्प निर्माण में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। उपन्यास के सभी तत्व मिलकर उसका स्वरूप निर्मित करते हैं। जिस पद्धति से घटनाएं, चरित्र, वातावरण तथा कल्पनाएं कथानक में परस्पर गूँथी या बुनी जाती हैं, उसे मैकेनिक्स अथवा बुनावट की संज्ञा दी जाती है।"[1]

हिंदी गद्य साहित्य के विद्वान डॉ त्रिभुवन जी ने स्पष्ट किया है कि शिल्प रचना का मतलब रचना की बुनावट है जिसमें विधा के सभी तत्व होने चाहिए। शिल्प का संबंध

रचना से होता है। रचना को आकार देने के लिए जो विधान किए जाते हैं जो विषय के अनुरूप ही करते हैं। विषय व रचना शिल्प दोनों एक दूसरे पर आधारित रहते हैं। हर रचना पर एक ही शिल्प विधान नहीं रहता है। वह विषय के अनुसार बनता है। अर्थात शिल्प विधान सभी विधा या विषय के लिए, समान नहीं रहता है। सभी की बुनावट, घटनाएं, उद्देश्य, प्रस्तुतीकरण अलग तरह का होता है। सबका स्वतंत्र अस्तित्व होता है। उपन्यास, गद्य साहित्य की विभिन्न विधाओं में सर्वाधिक समृद्ध एवं गरिमा पूर्ण साहित्यिक रूप है। उपन्यास में इस प्रकार की विधान व्यवस्था होती है कि उपन्यासकार अपने मन: प्रभावो को पूर्णरूपेण निरूपित कर सकता है। उपन्यास में महाकाव्य जैसी विविधता व व्यापकता व विस्तार का मौका होता है। इसीलिए उपन्यास को महाकाव्य के आस-पास माना जाता है। कहानी में जहां एक घटना या व्यक्ति के एक जीवन काल के कुछ दिन की ही अभिव्यक्त होती है। वही उपन्यास में बड़े विषय को व्यापक रूप में अभिव्यक्त होती है। जैसे कहानी में पात्र के जीवन की कुछ घटनाओं की ही चर्चा होती है, जबकि उपन्यास में पात्र या नायक के पूरे जीवन को व्यापक स्तर पर व्याख्यायित कर सकते हैं। हिंदी गद्य इतिहास में उपन्यास सबसे बड़ी विधा मानी जाती है। उपन्यास में सामान्य पाठकों को सबसे महत्वपूर्ण कहानी होती है। यदि विषयवस्तु अच्छी है तो सामान्य पाठक खूब पसंद करता है। हर उपन्यास का सबसे प्रमुख तत्व कहानी ही है। कहानी कहने का तरीका उपन्यासकार पर निर्भर करता है कि वह कहानी कहने का शिल्प कैसे करता है। उपन्यास के रचनाकार शिल्प पर श्रीमती बसंती पंत के विचार दृष्टव्य हैं।

" उपन्यास गद्य साहित्य की विभिन्न विधाओं में सर्वाधिक समृद्धि एवं गरिमा पूर्ण साहित्यिक रूप है। आकार- प्रकार एवं प्रतिपाद्य दोनों दृष्टिओं से गरिमापूर्ण साहित्यिक रूप है। आकार प्रकार एवं प्रतिपाद्य दोनों ही दृष्टि से इसकी तुलना केवल महाकाव्य से की जा सकती है। डॉ. देवराज उपाध्याय ने तो उपन्यास की प्रबंध काव्य और रोमांस का ही परिष्कृत रूप माना है। रामधारी सिंह दिनकर ने भी स्वीकार किया है कि जो काम पहले

महाकाव्य करते थे, वहीं बाद में उपन्यासों द्वारा किया गया। प्रो. टिलियार्ड का तो मत है कि 19वीं शताब्दी तक आते-आते महाकाव्य धारा का उपन्यास के प्रवाह में लोप हो गया।"[2]

सभी विद्वान व लेखकों ने उपन्यास विधा की युक्त मुक्त कंठ से प्रशंसा की है। उपन्यास निश्चित ही महाकाव्य से कम नहीं है। हिंदी साहित्य के गद्य विधा में उपन्यास विधा सबसे प्रतिष्ठित है, और उतना ही प्रतिष्ठित है उसका शिल्प विधान। रचना विधान की दृष्टि से देखें तो उपन्यास विधा के प्रमुख तत्वों में कथावस्तु, चरित्र चित्रण, संवाद , देशकाल, भाषा व उद्देश्य माने गए हैं। उपन्यास में शिल्प विधान अन्य कलाओं की तुलना में आसान नहीं होता है। वस्तु मूर्तिकला चित्रकला आदि विविध कलाएं ठोस, द्रव्य और स्थिर रूप मे हमारे अवलोकन और परीक्षण का आधार होती हैं। परन्तु उपन्यास में ऐसा नहीं होता है। इसमें हमारे सामने उपन्यास की एक पुस्तक होती है, उसके बिंब विधान व प्रतिबिंब को पकड़ना होता है। इसका परीक्षण, समीक्षक आकार और प्राकल्पना से कर सकता है। उपन्यास जब पढ़ा जाता है तभी से वह स्मृति में चला जाता है। कुछ दिन बाद तो उसके कुछ अंश ही मन:स्थिति में बचते हैं। इसलिए उपन्यास, प्रशंसा के मामले में वास्तुकला, चित्रकला से पीछे रह जाता है।

डॉ नीरजा माधव के कथा साहित्य मे शिल्प का अध्ययन हम दो भाग के करेंगे पहला भाषागत व दूसरा शैलीगत अध्ययन जो निम्न है।

6.1 भाषा का परिचय

साधारणतया भाषा शब्द से आशय कहना या बोलना है जिसके माध्यम से सभी का आपस में संचार होता है। भाषा का स्वभाव हमेशा बदलता रहता है।"भाषा शब्द संस्कृत की 'भाष' धातु से बना है जिसका अर्थ है 'बोलना' या 'कहना' भाषा वह जिसे कहा

जाए ।"[3] मनुष्य के विकास के साथ-साथ भाषा का भी विकास होता आ रहा है । भाषा सिर्फ संचार का साधन ही नहीं बल्कि रीति- रिवाज, परंपरा का वाहक भी है । मनुष्य भाषा की वजह से ही पशु- पक्षी जीव- जन्तु से भिन्न लगता है । अतः कहा जा सकता है कि भाषा के द्वारा ही हम सोचते हैं तथा विचारों या भाव को व्यक्त करते हैं ।

लेखिका नीरजा जी ने अपने कथा साहित्य मे भाषा को जीवंत बनाने के लिए पात्र व भाव के अनुसार विविध स्तर की भाषा का उपयोग किया है । इसी कारण इनके साहित्य मे विविध स्तर के पात्र व अलग- अलग विषय की कथावस्तु पर रचनाए मिलती है । पात्रो मे अनपढ़, शिक्षित,ग्रामीण,हिन्दू ,मुसलमान आदि समाज के सभी वर्गो को शामील किया है ।उनकी भाषा मे सरलता ,सहजता, स्पष्टता भरपूर है । लेखिका के उपन्यासों व कहानियो मे भाषा व शब्दों के विविध प्रयोग मिलते है । डॉ सत्यापल शर्मा ने नीरजा माधव की उपन्यासों की भाषा पर कहा है की "उपन्यास की भाषा उसमे प्रयुक्ता संवादो की भाषा की तरह ही सहज, स्वाभाविक,प्रसंगानुकूल ,प्रभावोत्पादक और रोचक है । बात-चीत की प्रक्रिया मे देशकाल, वातावरण, सामाजिक – एतिहासिक संदर्भों से जुड़ी अनेक स्थितियो – समस्याओ पर विचार किया गया है । भाषा प्रसंगानुकूल, संस्कृतनिष्ठ भी है और उर्दू के शब्दो का भी धड़ल्ले से प्रयोग किया गया है ।" [4]

6.1.1 तत्सम् शब्द:

डॉ नीरजा माधव जी ने अपने कथा साहित्य में तद्भव शब्द का उचित प्रयोग किया है । ऐसे शब्दों के प्रयोग में बोलने वाले के औचित्य के हिसाब से शब्दों का उच्चारण मिलता है । जो कथावस्तु के विकास के किए उपयोगी है ।

सिद्धेश्वर जी, ब्रह्मण योनि , वीर भोग्या वसुंधरा, स्वप्नलोक, खरोष्ठी, भवंतु सब मंगलम, शून्य गर्भा,पूर्णता, पीत-वसना, प्रस्तर, प्रतिमा, पश्चात् दिग्भ्रमित, प्रसन्न,

ब्रह्मचर्य, पुनः, मुमुक्षु, पतत्वेष कायो उट एकदा जम्बूदीपे भारत साधना श्री प मन्त्रर्याः सफलाः सन्तु, शत्रूणां बुद्धि नाशोस्तु, मित्राणामुद्यस्तव, वासंसि जीर्णानि यथा विहाय...।, पुत्रोहम्, अभिज्ञानशाकुन्तलम्, भ्रूणहत्या, विप्र-पेष, भैवाष्टक, वसुधैव कुटुंबकम् ।

डॉ. नीरजा माधव ने तत्सम् शब्दों का बड़ा ही समुचित प्रयोग किया है। शब्दों के प्रयोग को देखकर तो ऐसा आभास होता है कि वे शब्द प्रकृतितः अपने उचित स्थान पर स्वयं आकर जम गए हैं ।

6.1.2 अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग तथा वाक्य

डॉ. नीरजा माधव ने अंग्रेजी बिषय मे पी-एच.डी. की है । अतः लेखिका का अंग्रेजी भाषा पर अच्छी पकड़ रखती हैं । इनके उपन्यास व कहानियों में पात्रों द्वारा सहज ढंग से अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग हुआ है । उनकी रचनाओ मे कहीं- कहीं महानगरो से जुड़े पात्रों द्वारा अंग्रेजी का खुलकर प्रयोग मिलता है । तो कहीं ग्रामीण पात्रों द्वारा भी अंग्रेजी के घिसे पिटे शब्दों का प्रयोग मिलता है ।

लेखिका ने अंग्रेजी वाक्यों का पात्र व भाव अनुकूल प्रयोग किया है ।

इंटरव्यू, सीरियल ब्लाष्ट, ऑफ टाइम, सर्टिफिकेट, इंन्सपेक्टर, सैल्यूट, कालबैल, मेडिकल साइन्स, इन्डियन मम्मी, ब्रोडकास्ट, लाइब्रेरियन, कंसोल, फेडर, रिटायरमेन्ट, सेक्युलेरिज्म, हास्पीटल, किलोमीटर, एडजस्ट, नुडुल्स, डायरी, फीचर, मिलिट्री, जेल, कैम्पस, गेट, फूड प्रॉसेसर, मशीन, सेल्समैन, मोटर, स्टार्ट ड्राइंगरूम सोफा, पजेसिव फ्लैट, कालोनी मीटिंग, थर्मस, हॉल, पर्स, प्लेन क्रीम कलर, प्रमोशन, ट्रान्सफर, प्रैक्टिकल, निपल, लिपिस्टक, कुलोजर, आर्डर नोट, स्पेशल, शेड, गायिस, पेट्रोलिंग, ब्रेक डयूटी बैरिकेटिंग बूट, लाउडस्पीकर, स्टोव, शीट, टैक्स, सीमेंट, बिल्डिंग, मोजाइक टाइल,

टैम्पो, बाथरूम, कमोड, फैशन, अल्टीमेटम, पेन्ट बस, कन्डक्टर, पैसेंजर, रिजर्व टैक्सी, हैण्ड बैग, हॉस्टल, ओल्ड होम, बॉर्डर, हॉस्पिटल, स्टाफ, पैंटी, रिपेयरिंग चार्ज, प्लीज, न्यूज, शिफ्ट सीनियर, वार्डबॉय, नंबर, वेरी सॉरी, डेड बॉडी, रोबोट, कोर्ट, स्टोर कीपर, एन्टी एलर्जिक, जनरल वार्ड, आई. सी. यू स्टार हाईस्कूल, टेम्परेचर मेन्टेन कूलिंग ए.सी. कूलर, सिस्टर, बी. एड. एम. ए., स्क्रिप्ट, डिमांड, बोल्ड, क्लासिकल, आई मीन माइंड, फेमिनिस्ट, अंडरस्टैडिंग, एन्जवॉय, रेस्टीकेट, सर्किट हाउस, प्रेस कान्फ्रेंस, डाइनिंग टेबल, क्लास, बैक-बैंचर, प्रेशर हॉर्न, गनर, टार्च, बॅटरी, मारब्रेट लीडर म्युनिसिपैलिटी एवार्शन, कॉन्ट्रैक्ट, ड्रिंक, अर्निंग, सैन्डल, अट्रैक्ट, शॉट, एफेक्ट, टिकट, स्ट्रो पाइप, प्रेगेन्सी पीरियड, वर्किंग कपल, एडजस्ट, मॉडल, कमेन्ट, कास्टेबुल, फुटपाथ, अंडरग्राउंड क्रॉसिंग, पब्लिक डिस्पोजल, पेडिग, हेल्मेट, पर्सनल, गेट-टुगेदर, डिडी, बैकग्राउंड, कॉन पॉप डांस, नेम प्लेट, फायरिंग मेकअप, लिपस्टिक, स्टैचू, सप्लायर, टी.बी., एडमिशन, डीजल-पेट्रोल, हँडल, पैंट, मैच्योर, फ्लैश, सूट, हाफ स्पेटर, डॉर्न, सेडी, प्रोफेशनल फैक्टशी डांसर, स्टेज शो, स्टीयरिंग, हेडलाइट, स्टूडिओ, ग्रुप, सर्जरी, एपेंडिसाइटिस, पॉजिटि ट्रान्समिशन क्लोज, एस.डी.एम., पुट-अप, जी. जी. आई. सी. पोर्टिको रूप-मेद एडजस्ट, एम. एस. सी., कोल्ड ड्रिंक, डॉक्टरेट, पोस्टिंग, डी.एम., ट्रांसफर, कमेटी, अथलीट स्टेडियम, जॉगिंग सरप्राइज, चैम्पियन, हार्मोनल, एबॉर्शन, कैप्टन ग्लेशियर, नाइट बल्ब, रूम हिट आदि।

डॉ. नीरजा माधव ने अंग्रेजी शब्दों के साथ आवश्यकतानुसार अंग्रेजी वाक्यों का भी प्रयोग किया है। जैसे -

1. "आई एप्रीशियेट योर ड्युटीफुलनेस।"[5]

2. "शी इज डुइंग ग्रेजुएशन ।"[6]

3. "वोन्ली आई वान्ट टु सी इनसाइड द.....।"[7]

4. "प्लेयर से फिलरवाली सी.डी. निकालकर प्लास्टिक कवर में रखते हुए उसने मशीन का रिवाईडवाला बटन दबा दिया था ।"[8]

5. "नाउ मि. माडवेल, यू हेव बिकम ए मांक ।" [9]

6. "आई आल्सो थिंक सो माय।"[10]

7. "मोस्ट प्रोबेल्ली संडे विल सूट अस ।"[11]

8. "शी इज प्रोवाइडिंग मी मेन्टल सपोर्ट एण्ड आई प्रोवाइड हर फिजिकल ।"[12]

9. "पेपर्स आर रेडी ।"[13]

10. "हाऊ लकी यू आर मैडम ।" [14]

11. "केयर योर क्लॉथ ।" [15] (आदिम गंध तथा....99)

12. "मैडम में आई कम इन ? "[16]

13. "रियली इज वाट एक सक्सेसफुल प्रोग्राम ।" [17]

14. " आई नो दिस फैक्ट ।" [18]

6.1.3 उर्दू, अरबी और फारसी शब्द :

डॉ नीरजा जी के कथा साहित्य में उर्दू, अरबी, फारसी शब्द का यथा स्थान,स्वाभाविक प्रयोग मिलता है ।

रिक्सा, इज़ाजत मोहतरमा, बरखुरदार ,कबाइली,बदज़ात काफ़िर, जिंदगी, मुखातिब, गुजर, दस्तक, शिकायत, जमीन, उम्र, मौसम, नाराज, लिहाफ, ,बुनियादी सजा, महसूस, खिलाफ, सजायाफ्ता, तेज, फरमाइश, कब्जा, तमन्ना, जिम्मेदारी, दरवाजे,

गलती, आखिर, जिद, मंजिल, आखिरकार, गुजरे, गलत, जहर, ,एहसास, मुलायमियत, कोशिश, नाराज, जल्दबाजी, खामोश, खत्मक, वजूद, साफ, जवाब, अखबार, हुजूर, मालूम, बरक्कत वदी, सफेद, मुआवजा, तकलीफ, खुशी, दफ्ती, खलल आदि ।

6.1.4 अवधी भोजपुरी और स्थानीय बोलियों के शब्द एवं वाक्य

डॉ नीरजा माधव मूलरूप से अवधि व भोजपुरी क्षेत्र उत्तर प्रदेश की होने के कारण, इन बोलियों के शब्द व वाक्य उनके रचनाओं में सहज ही प्रयोग हुए हैं । उन्होंने स्थानीय से संबंधित ग्रामीण पात्रों व प्रसंगो का खूब प्रयोग किया है । स्थानीय बोलियो के शब्द जैसे कि- नन्हकी, चइत, गवना, नगचा, तनिक, अबेर, गठियाये, बकइयाँ, मोह, सलीब, सीवान, सपरती, बिजूका, गारद लाद, गठिया, हेंगा, पगुरी चक परती, ऊख, खरमिटाव, ठोर, बेटवा, मुरदार, बहुरिया, चापाकल, दिलहिया, ककही, गमछा, खोराकी, दुपहरिया, गढ़ई पोखरा, घलुआ, गुमटी, लुगाई, पखाना, चिंहुक, फफाए, रिरियाया, पटिय, मटियाते, सुरसास, बैना, सुअरबाड़े, बेना, ढिबरी, बेहयाई, मड़ई, सूर्ती, चपत, फंकी, मुडेर, ललक, तलही चिरई, पाड़े, हेंगे, खुत्थी, मोढ़े, फफोला, दंइत्रावीर, पियरी, कढ़ाई, मनौती, रोपनी, बोअनी, ठोंगा, सपरेगा, पचला, पुआल, सिले, कथरी, धुनवा, नवाकर, दियासलाई, सिधरी, बउलिया, तिरास्ते, चकरोड, महज्जत, बिछौना, भगोड़ा, नून, औघड़दानी, तोहमत, सीवान, थुक्का, फजीहत, पिड़िया, झामड़ा, कोढ़ी, कसोरे, लोहबान सुलगाई, झोप्पादार, पन्छोडद्व दाढ़ीजार, पोछिल्ला, सहुर, ढोर, सुकुआरी, पतुरिया, लुहेडे, सरपत, झांझर, झोंटा नपोस, नासपीटा, बीड़ी, काजा, नाहके, जिन्नत, टेपरा, भंगरैया, महेरिया,

केड़ियाँ, टोह, मरकही, दउरी, अंगीठी, बैठन, हाकिम, झांपिया, गुदरी चौकड़िया, रिन्हाएगा, चाउर, खस्सी, बेला, बछिया, पाजेब, खुत्थी आदि ।

डॉ. नीरजा माधव ने अवधी, भोजपुरी और स्थानीय बोलियों के वाक्यों का प्रयोग भी किया है यथा-

1."ई ससुरी एक ठे डिब्बा के सामने लोक बइठ के भड़ैती देखत हा न लाज न शरम उहै लड़िकौ देखे, उहै अपनो.....। कउनो परदा न हया । फोड़ देब, कुल खिस्सै खतम होई जाई ।"[19]

2."ई हमारी जेठान है और ई उनका लड़कां ।" [20]

3."इन सबन को तो होशै नहीं रहता । वहीं कोहबर में ही तो गठरी बाँध के रखी थी।" [21]

4."सबके हज्ज का सबाब दूँगा ।"[22]

5."पता नहीं क्यों मुझे इस प्रकार के धार्मिक संरक्षण वाडे में ठठरियाए गए पशुओं की तरह लगते हैं ।" [23]

6.1.5 स्थानीय हिंदी बोली एवं भाषा

डॉ नीरजा जी के उपन्यासों एवं कहानियों में हिंदी वाक्यों का स्थानीय गोलियों के मिश्रण के साथ प्रयोग प्रसंग अनुकूल मिलता है । लेखिका का यह प्रयोग पात्र का स्वाभाविक गुण लगता है उनके कथा साहित्य के कुछ उदाहरण निम्न है।

1. " इग्यरहवाँ में हमारा विवाह हुआ था, उसके तीरे में गबना गया। उसके दो साल में चार महिन्ना बाकी था तभी हमार बड़ा बेटा पैदा हुआ। इस समय उसको बारहवाँ लगा है। अरे बहिनजी, हम आज के हैं? अब तो उमिर नगचा गई ।"[24]

2. "नहीं, मैं ऐसे ही चली जाऊँगी। उस दिन जोखन चमार के खेत में गेहूँ बटोर रही थी तो उसका बड़ा वाला बेटवा मेरे पास आया था और इसे नोच कर हँसते हुए चला गया था ।" [25]

3. "हटो जी, डाढ़ा लगे इस फैशन में । आदमी से चौपाया बनने में ही सारा फैशन है । अरे वैसे बैठने में क्या तकलीफ थी जो यह कुर्सी बनवा दिया ।"[26]

4. "अरे, क्या आडर मिला है ?...कि किसी के पेट लात मारो ?.. अरे, ई तो गोर्रा लोगों के जमाना से भी खराब जमाना आ गया । अरे बाप रे बाप ।"[27]

5. "डाढ़ा लगे न लोगों के आने में कितने लोगों की रोजी-रोटी, घर-दुआर उजाड़कर आते हैं ये दुकड़हे ।"[28]

6. "ओभी पेपोर में निकोला है कि तीन चार पादोरी जिंदा जोला दिए गए। लाश भी पोहचानने लायक नहीं रही ।"[29]

7. "इतनी देर से क्या करेली तू....। अक्खा आईसी क्या, बम्बई का भीड़ जूट गया और तू... स्साली....खाली - पिल्ली मगज खराब करेला है। कहाँ है तेरालमरद पल्टू बुला उसे .....।"[30]

8. "ई ससुरी एक ठे डिब्बा के सामने लोग बइठ के भड़ैती देखत हा न लाज न शरम । उहै लड़कौ देखै, उहै अपनो...। कउनो परदा न हया, फोड़, देव, कुल खिस्सै खतम होई जाई । "[31]

9. "हे चंतरवा, शंतिया, तुम लोग बक-बक ही करती रहोगी कि काम भी करेगी ? कड़ाही खाली जा रही है। घी जल रहा है और तुम लोग बतक रही हो ।"[32]

10. "सब बौराया है रे पगली। पूरा देस सरकार ने सबको दारू पीने की ही है। बड़े लोग और असफर बरांडी वाईन पीते हैं और गरीब लोग ठर्रा और....।"[33]

13 . ई हमारी जेठान है और ई उनका लड़का । इनको तो जानती ही हो बिटिया ।"[34]

14."फूँकने वाला करम करेगा तो क्यों नही फूँकाएगा । सितरनी पकड़ी गई थी एक काजा के साथ तो उसे गरम लोहे से दाग गया था बीड़ी में फूला को भी बीड़ी में ।फूला को भी बीड़ी रखाई में डांड भरना पड़ा था, क्योंकि टेपरा में नोनियान के एक लौंड़े के साथ हँसी ठट्ठा करते धराई थी । तू ही एक नोखे की तो नहीं है ? " [35]

15. "मेरा माँस खाकर गए। बरसात में सारी लकड़ी मेहरा गई है क्या अपना हाथ गोड़ लगाकर पकवान बना देती ।"[36]

16. "सांझे बेला चौकडिया मारना है कि कुछ मुँह तक जाने के लिए रिन्हाएगा भी ? "[37]

17. "मालकिन आपै क दिहल पहला से बरातिन क शुआगत सतकार कईली है बस अब आपन आसिस सुधिया के देहल जाय कि घरे अपने सुखी रहे ।"[38]

इन वाक्यों में अवधी व भोजपुरी के साथ हिंदी भाषा का स्वाभाविक प्रयोग क्षेत्रीय स्तर पर मिलता है ।

1. पात्रानुकूल भाषा :

उपन्यास और कहानी में जो बातचीत होती है उसे ही उपन्यास का संवाद योजना कहते हैं । संवाद के माध्यम से ही कहानियाँ आगे बढ़ती है क्या घटित हुआ और क्या घटित होने वाला है, इसका पता पात्रों के कथन के माध्यम से चलता है । संवाद से पात्रों के गुण- दोष की पहचान होती है । घटनाओं को गति प्रदान करने के लिए कथन सहायक होते हैं । संवाद ही है जो घटना व पात्र को एक दूसरे से संबंध स्थापित करता है । किसी भी रचना का कथ्य या उद्देश्य स्पष्ट करने या रचना के लक्ष्य की प्राप्ति में कथन व संवाद महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं । पाठक को सहज स्वाभाविक कथन अधिक रास आता है । संवाद सार्थक हो तभी अच्छे लगते हैं । जैसे यदि कोई ग्रामीण पात्र शहर की भाषा बोले तो वह सार्थक नहीं लगता है । उपन्यासकार को संवाद योजना में हर पात्र की पृष्ठभूमि

देखकर ही कथन बनाना होता है पात्र की योग्यता अनुसार ही कथानक की योजना की जाती है। संवाद योजना हर गद्य विधा का प्राण स्वरूप होता है । क्योंकि वह नाटक की तरह दृश्य नहीं होता है उसमें संवाद कम महत्वपूर्ण नहीं है इसी के द्वारा पाठक को रहस्य रोमांच का अनुभव होता है उपन्यासकार संवाद योजना प्रसंग अनुकूल करता है सबसे अच्छा कथानक वह माना जाता है जो पात्र के मनोविज्ञान से जुड़ा हुआ होता है और नाटकीय मोड़ या रोमांच उत्पन्न करने वाला होता है।

1. 'सुभद्रा का चक्रव्यूह' कहानी में नायिका निहारिका अपनी सहेली डॉ॰ निशा की आपस की बातचीत -

"निशि, क्या सच है कि गर्भवती के प्रारंभिक महीनों में हार्मोनल परिवर्तन के कारण महिलाओं की कार्य क्षमता और स्फूर्ति अधिक हो जाती है ?"

"हाँ यह सत्य है।"

"निशि, तुम मेरे लिए कैरियर की खातिर एक झूठ बोल सकोगी ?"

"बोल तो सही क्या है?"

"देख निशि तू तो जानती है मैं अपने कैरियर से भी उतना ही मोह रखती हूँ जितना सिद्धार्थ को हृदय से चाहती हूँ और सिद्धार्थ को मैं किसी बात से दुखी नहीं करना चाहती ।"

"निक्की, डाक्टर होने का मतलब निर्मम और संवेदन शून्य होना नहीं होता । तुम्हारे स्वस्थ गर्भ को विकलांग होने का झूठ बोल एबॉर्शन करवाने की सलाह देने के लिए मेरी आत्मा तो गवाही नहीं देती ।"

"पर निशि, यदि वह अवसर मेरे हाथ से निकल गया तो मेरा भविष्य अंधेरे के गर्भ में समा जाएगा । उसे बचा लो निशि । मेरी गोद तो उसके बाद भी हरी हो जाएगी।"

"हम डाक्टरों की जिंदगी भी क्या है? कर्तव्य का नैतिक जामा पहना कितने अनैतिक कार्य यही हमारे हाथ करते हैं।"[39]

2. कहानी 'अभी ठहरो अंधी सदी' की दलित गरीब नायिका पर कलियाका का कैमरे के सामने साक्षात्कार का एक अंश

"कैमेरा.... ऑन.... । लाईट.... । टेक..... ।"

" .. आपका नाम क्या है?"

" परकलिया....।"

"कितने बच्चे हैं?"

" ...चार....।"

"पढ़ने जाते हैं..... ?"

"नहीं.....?"

"क्यों ? क्यों नहीं जाते बच्चे स्कूल ?"

" अब क्या बताएँ.....? काम-धंदा में कौन हाथ बँटाएगा ? एक सूअर है उसका देखना। कार-परजोन के लिए पत्तल दोना बनवाना। कटिया बिनिया करना। अकेले हम लोगों से सपरेगा बहिन जी ?"

"खेती कितनी है?"

"खेती ही होती तो क्या? हमारी बिरादरी में किसी के पास खेती भर की जमीन नहीं है।"

"आप लोगों के लिए सरकार की तरफ से पहले ही सुविधाएँ दी गई हैं।"

"सरकार भी तो उसी का सुविधा देवे है जिसमें बढ़कर लेवे की कूबत है।"

“हम लोगो की दशा तो ओ ही पनरुआकी तरह है लंगड़ ।”[40]

3. कहानी ‘सांझ से पहले’ में गरीब मजदूर वृद्धों की आपस की बात का एक उदाहरण-

हाँ। जाहिर सी बात है ।"

"लेकिन इतना पैसा कहाँ आएगा?"

"हम लोग अपने-अपने पेंशन से एक-एक हजार प्रतिमाह दान कर दें तो... ।",

" अरे सब लोग कहाँ कर पाएँगे? बहुत करेंगे बीस-पचीस लोग ऐसा कर पाएँगे ।"

" पचीस हजार महीने भी बहुत हुए ।"

"अरे! कम-से-कम आठ-दस लाख से नीचे में तो सोचा भी नहीं जा सकता ।"

"इतना जुटाने में ही हमसे कितने लोग विदा ले लेंगे ।"

"जमीन ही लेने में तीन-चार लाख चाहिए । फिर बिल्डिंग बनवाने में कम पाँच-छः लाख ।"

“कोई स्वयं सेवी संस्थान क्यू आगे आयेगी भी इस कम के लिए ?” [41]

4. “लड़ाई जारी है” कहानी की नायिका नवनीता अपने घर के पास की बुजुर्ग महिला जो की स्वतंत्रता की लड़ाई में शामिल थी से बातचीत का एक अंश_

"आज ऑफिस नहीं गई बिटिया ?"

"नहीं! अम्मा आज आपसे कुछ पूछने आई हूँ।"

"पूछो ! क्या पूछना चाहती हो?"

"आपने स्वतंत्रता संग्राम में भी हिस्सा लिया था न ?"

"हाँ।" "आजाद हुए हमें अब पचास वर्ष पूरे होने जा रहे हैं । आप उस समय कितनी बड़ी थी अम्मा?"

"अरे सुराज मिले अगर पचास वर्ष हुआ तो... कब का पूछना चाह रही हो बिटिया ? जब मैं जेल में थी जब सुराज मिला?"

"दोनों समय का।"

"जब सुराज मिला था तो उस समय मैं रही होऊँगी लगभग पंद्रह-सोलह साल की। कक्षा पाँच में ही तो पढ़ रही थी।"[42]

5. जलियांवाला बाग हत्याकांड पर लिखी गई कहानी 'पुन्नू के दारजी' में पति की मृत्यु के बाद पत्नी उसकी तस्वीर से बात करते हुए का एक उदाहरण-

"आज बैसाखी है पुन्नो के दारजी ! यहा बसन्त मालती के फूलों की माला लो पहनो ! अच्छा एक क्षण रुको ! मैं जरा वो स्टूल खींचकर ले आऊँ। तुम्हारी बहुत ऊँचाई पर टंगी है न।"

"कितनी बार बलविन्दर से कहा कि जरा नीचे कर दो। पर वो सुनता कहाँ है?"

"डाँट नहीं पाती अब उसे वो भी तो बाल-बच्चों वाला हो गया है। बड़े-बड़े बच्चे। अब तो उन सबकी भी शादी भी हो चुकी है। उनके भी नन्हें-नन्हें किलकारी भरते छौने हैं।"

"देखो, तुम केवल तीन लोगों का परिवार छोड़कर गए थे और मैंने उन्हें तेरह का कर दिया है।"[43]

6. 'एरियर' कहानी में पति-पत्नी अशोक व रेनू की जीवन से जुड़ी बातचीत का सुंदर उदाहरण-

" हमेशा आशावादी होना चाहिए मनुष्य को।"

"इसी आशा में पूरा जीवन बीत रहा है। यह कौन सी नई फिलॉसफी समझा रहे हो?"

"लेकिन अब तुम्हारी सारी उम्मीदें पूरी कर दूँगा।"

"क्यों, कोई लॉटरी निकल आई है क्या ?"

"नहीं, वो नए वेतनमान का हम लोगों का ऐरियर अब जल्दी ही मिल जाएगा न सम्भवतः इसी महीने में।"

"मैं भी नौकरी में होती तो मुझे भी...।"

"कोई बात नहीं। तुम सोच रही हो मेरे भार के बारे में, मेरे लिये यही पर्याप्त है।"

“हाँ अब यह कहना तो तुम्हारी मजबूरी है ।”

"जो बीत गया उसे याद करने से क्या लाभ ?"

"बीता कहाँ हैं ? वह तो अब बीत रहा है। हर पल हमारे जीवन के साथ।"

"क्या सारी पढ़ी-लिखी महिलाएँ नौकरी कर पाती हैं ? तो मान लो कि तुम्हारी पढ़ाई पूरी हो गई थी उस समय । बस नौकरी नहीं मिल पाई ।"[44]

7. 'पथदंस' कहानी में नायक नायिका की मनोरम बातें-

"तेरे हाथ से मछली फिसलती क्यों नहीं?"

"तू हल्के से पकड़ता होगा ।"

"अच्छा, ये बात है ? तो ले, इस बार कसकर पकड़ता हूँ । नाम नहीं बताया तूने?"

"छिपुनी।"

"यह भी कोई नाम है ? इससे अच्छा तो सिधरी रख लेती । ....छोटी-सी सीधी, पानी से बाहर निकलते ही बस.....टें.... ।"[45]

1. किवाड़ के बिना' कहानी में नायक- नायिका एक दुकान पर चाट खाने जाते हैं तो वहां किसी गरीब आदमी का झोला छूटगया था, इसी पर वहां उपस्थित लोगों का संवाद

"यह बैग किसका है यहाँ ?"

"कोई जान-बूझ कर छोड़ गया है यहाँ ।"

"देखने में तो किसी गरीब व्यक्ति का लग रहा है?"

"फटा-पुराना है ।"

"देखिए, भाई साहब, छुइए नहीं। इसमें कुछ विस्फोटक भी हो सकता है । आजकल इस तरह की घटनाएँ हो रही हैं।"

"स्साल आतंकवादियों की.... "

"आम पब्लिक को मार कर न जाने क्या मिलता है उन्हें?"

"अरे, घोटाला करने वाले, भ्रष्टाचार फैलाने वालों को मारे तो कोई जाने।"

"उन्हें क्यों मारेंगे? वही लोग तो इनके आका होते हैं। नहीं तो पकड़ न लिए जाते।"

"अमां मियां, पुलिसवाले भी जान-बूझ कर चुप रहते हैं । मालूमात सब रहता है ।"

"उन्हें चुप करा दिया जाता है ऊपर से ।"

"अरे, अन्दर मौत का जाल बिछ रहा है यहाँ तो ।"[46]

2. कालिदास रचित अभिज्ञान शाकुंतलम् नाटक का मंचन व संवाद का उदाहरण जो कि 'पुत्रोंअहम' कहानी में से है ।

"मुझे आपके सान्निध्य में एकान्त से डर लगता है।"

"क्यों ?"

"कही महाराज..... "

"तो क्या होगा ?.... मैं तो चाहता हूँ।"

"नहीं। प्रेम अटल सत्य की भाँति है। दुर्बल होने का अर्थ है प्रेम का डिग जाना, अपने स्थान से हिल जाना । मैं प्रेम को इतने दुर्बल रूप में नहीं देख सकती महाराज उसे अटल होना ही

चाहिए । एक गर्वोन्नत चट्टान की तरह जिसे जब भी चाहूँ उसी रूप में निहार सकूँ, उसी स्थान पर पा सकूँ ।"

"तुम्हें मुझ पर विश्वास नहीं ? छल करूँगा तुम्हारे साथ ? "

"नहीं नहीं, मेरा आशय कदापि ऐसा नहीं महाराज ।"

"तो स्वीकार कर लो शकुन, मेरा प्रणय निवेदन ।"

"नहीं महाराज, मुझे दुर्बल न बनाइए यह उचित नहीं होगा । मेरे पिता... फिर आपकी पूर्ण पत्नी..... ।" [47]

3. कहानी 'अजिब्बा गुरु का शंख' में अजिब्बा गुरु और थानेदार की कचहरी में बहस -

"जमीन किसकी है?"

"जी हमारी है।"

"काबिज कौन है ?"

"जी, अभी कुछ महीने पहले ही हमने मुकदमा जीता है?"

"आस-पास आबादी या ग्राम समाज है?"

"जी पता नहीं।"

"जरूर होगी, तभी उन सबों ने ईट गिरवाया है।"

"जी साहब, अभी नहीं । इसीलिए तो हमें आपके पास दौड़े आए।"

"दौड़े आने से क्या होगा ? कुछ खर्चा पानी करना होगा ।"[48]

4. डॉ नीरजा माधव द्वारा 'हव्वा' कहानी में नायिका नैना व पवन के बीच एक फूल को लेकर सुंदर संवाद का एक उदाहरण-

"इस फूल की खुशबू बहुत अच्छी होती है।"

"जी।"

"बिलकुल किसी कि निर्मल हँसी की तरह । "

"वाह, क्या तारीफ करने का अंदाज है ।"

"कहाँ से लाई है ?"

"मैं रोज एक फूल लॉन से तोड़ती हूँ और भगवान को चढ़कार प्रसाद के रूप में ले लेती हूँ।

कैम्पस में ही मन्दिर होने से मेरा दोनों काम हो जाता है पूजा और ड्यूटी भी ।"

"बहुत अच्छी आदत है आपकी जरा मुझे दीजिए इस फूल को ।"

" ऊँ हूँ ।"

"इस बात पर मैं अभी जाऊँगा और फूल तोड़ लाऊँगा।"

" पर उन सारे फूलों में यह फूल तो न होगा जिसे आप इस समय चाह रहे हैं ।"[49]

5. 'देश के लिए' कहानी का प्रारंभ एक वेश्या और ग्राहक के बीच के वार्तालाप का एक अंश-

"राखी बनाने का धन्धा भी करती हो ?"

"हाँ, उसी धन्धे की वजह से इस धन्धे में आ गई।"

"क्या ?"

"जी।"

"बहुत उत्सुकता हो रही है मुझे ।... पूरी बात बताओगी ?"

"क्या करोगे तुम जानकर ?.... जिस काम से आए हो....।"

"मैं पूरी रात यहाँ गुजार सकता हूँ ?"

"फिर और अधिक दाम देने पड़ेंगे । क्यों रहना चाहते हो पूरी रात ?"

"पूरी रात का कितना लोगी?"

"एक हजार रुपए ।"

"ये तो बहुत अधिक हुए मैं तो बस एक.... ।"

"यह धन्धा है बाबूजी होटल में कमरा लेते हो तो क्या इस हिसाब से कि तुम उसमें कितनी बार सोए थे । कितना बार तुमने खाया?"

"ठीक है। तुम्हारे तर्क से मैं परास्त हुआ। अब बताओ अपने बारे में क्या हुआ था ।" [50]

6. 'वाया पांडेपुर चौराहा' कहानी में नन्हे गोलू के उत्सुक प्रश्नों को उसके पापा द्वारा गोलमोल जवाब देने का एक रोचक उदाहरण-

"पापा, ये क्या कर रहे हैं ?"

"पुतले को फाँसी पर लटका रहे हैं।"

" पुतले को क्यों ।"

"अब सचमुच में वह आदमी उन्हें नहीं न मिलेगा ।"

"अगर मिल जाए तो ?"

"नहीं मिलेगा । दूसरे देश में रहता है।"

"किस देश में ?"

"एक बहुत बड़े देश का राष्ट्रपति है ये। यहाँ नहीं आ सकता है।"

"क्यों फाँसी दे रहे हैं । इसे ?"

"इनके अनुसार इसके इशारे पर एक-दूसरे देश के राष्ट्रपति को फाँसी पर चढ़ा दिया गया

था इसलिए।"

"ये कौन है?"

"सी. आर. सिंह।"

"ये सबको फाँसी देते हैं।"

"अच्छा, चुपचाप देखो ।" [51]

7. 'डमी' कहानी में लेखिका ने अंग्रेजी स्कूल में पढ़ने वाली बच्ची की बातचीत अपने भाई के साथ , एक चौंकाने वाला उदाहरण प्रस्तुत किया है-

"भइया, यू नो, आज मिस हम लोगों को कहाँ-कहाँ ले गई थी?"

"कहाँ।"

"ओ भइया, यू आर नॉट अटेंटिव टू मी सुनो न ।"

"हाँ बोलो।"

"वो मिस हम लोगों को मंकी-टेम्पल ले गई, ब्लैक मदर- टेंपल ले गई, फिर चर्च ले गई।"

"मंकी टेंपल ?"

"हाँ, वही, जहाँ तुम हर शनिवार को जाते हो ।"

"हनुमान मंदिर को मंकी टेंपल कहती हो तुम?"

"नो, नॉट मी मिस ने बताया है। कालीमाता मंदिर यानी ब्लैक मदर-टेंपल ।"[52]

8. 'ईहामृग' उपन्यास में एक विदेशी बौद्ध दार्शनिक और गरीब दुकानदार बच्चे का मेले में वार्तालाप-

" क्या नाम है तुम्हारा?"

"जी तूफानी ।" उसका गला मानो सूख रहा था।

"कहाँ रहते हो तुम ? " एम. अलभ्यानन्द के स्वर में स्नेह की मिठास घुल गयी ।

"इसी लॉन के पीछे गाँव है हम लोगों का, घुरहूपुर, वहीं।"

"अभी-अभी वहीं से आ रहे हो ?"

"जी नहीं, उधर से जम्प करके ।" उसने बगल की ओर इशारा किया ।

" क्यों ?"

"पुलिस लोग अन्दर नहीं आने देते हम लोगों को।"

"कहते हैं मत बेचो यहाँ ?" वह चोर निगाहों से इधर-उधर देख रहा था।

"क्यों ?" एम. अलभ्यानन्द को केवल एक शब्द से कई जानकारियाँ मिल रही थीं ।

"क्योंकि वे लोग हम लोगों से कमीशन माँगते हैं । कहते हैं जितने में बेचो, उसका आधा हमें दे दो । जल्दी करिए सर, आप लेंगे ? "[53]

9. 'यमदीप' उपन्यास में किन्नरों के गुरु 'महताब गुरु' का किन्नरों के समूह के साथ वार्तालाप--

" पा लगी गुरुजी" चमेली ने अपना दाहिना हाथ ऊपर उठाते हुए महताब गुरु को नमस्कार किया था और आकर चौकी पर गुरुजी के बगल में बैठ गई थी ।

"कल पांच बड़मा कमाए थे हम लोग बड़ा चोसा जजमान था । है न नाज!" मंजू ने नाजबीबी को कोहनी से धक्का दिया ।

"टेपकी के चक्कर में तो हम गुरुजी को बताना ही भूल गए।" इस बार चमेली ने अपनी बात पूरी की।

"नहीं, नाज ने आकर बता दिया। तुम लोग अपना-अपना हिस्सा मुझसे ले लेना।"

"क्यों, वो पूरा नाज रखेगी क्या?" चमेली की आंखों का प्रश्न कुछ अप्रिय था।

उसे नजरअंदाज करते हुए महताब गुरु ने समझाने का प्रयास किया— "देखो, एक इनसानी जान उसके पास है। उसकी परवरिश भी तो हम ही लोगों को करनी है।"

"लेकिन गुरुजी, ये टेपकी को डामरी की तरह भला नाज कब तक गले में लटकाई रहेगी?" चमेली की आवाज में विद्रोह का स्वर गूंज रहा था।

मंजू ने उसकी हां में हां भरी-

"गुरुजी, आखिर हम इसकी कहां तक सेवा सभाखन कर पाएंगे। चारदिन की तो बात नहीं कि टेपकी सुर्र से जवान हो जाएगी ?"

"फिर जवान हो ही जाएगी तो हमारी परेशानी थोड़े ही...."

"तो क्या टेंटुआ दबाकर वरुण में डाल आएं?" नाजबीबी से दोनों की बातें बरदाश्त नहीं हो रही थीं।"[54]

10. अखबार के फीचर के लिए ग्रामीण महिलाओ का स्वाभाविक साक्षात्कार वार्ता का एक अंश-

भेंटकर्ता : (पचहत्तर वर्षीया सरजूदेवी ने महिलाओं को न पढ़ाए जाने की बात को अपने जमाने से जोड़ते हुए सहज भाव से बताया -)

सरजूदेवी : पढ़ाई-लिखाई ? लड़िकन के पढ़ावे, बिटियन के कइसे पढ़ावे ?...आ त कुल अधिकारै न बा।

भेंटकर्ता : (वहीं आज के जमाने की बीस वर्षीया नजमा के लिए भी शिक्षा जैसे मूलभूत अधिकार से वंचित रहना उसकी एक सहज नियति है। उसके मन में इसके प्रति कोई विद्रोह की भावना भी नहीं।)

नजमा : जी, हम हिंदी तो नहीं हैं। अरबी पढ़े हैं, क्योंकि हमारे गांव में मुसलमान लड़कियों को हिंदी नहीं पढ़ाया जाता था, इसलिए हमारे अब्बू भी नहीं पढ़ाए।

भेंटकर्ता : (क्या उसे अपने अन्य अधिकारों की बात ज्ञात है? पूछने पर उसने बड़े भोलेपन से बताया -)

नजमा : हमारे आदमी जो ला देते हैं, वो हम खा लेते हैं, पहन लेते हैं। अब इसके आगे जानने की कोई जरूरत ही नहीं।"[55]

11. यमदीप उपन्यास मे माँ और मासूम बच्ची के बीच वार्तालाप का उदाहरण-

'मम्मी, नौ तालीख को हमाले स्कूल में पेलेंट डे हैं। सबके मम्मी-पापा आएंगे, मम्मी। तुम भी चलोगी?"

"कैसे बेटी ? हम कैसे जा पाएंगे?" नाजबीबी जैसे अपने ही प्रश्न के चक्रव्यूह में उलझ गई थी।

"नहीं मम्मी, तुम चलो ना ? मेली दोस्त है पूजा, उसके भी मम्मी-पापा आएंगे....सबके।" सोना उठकर बैठ गई थी।

"देखो सोना, बेवजह जिद मत करो। मेरी तबियत जरा गड़बड़ है न, बिटिया, इसलिए।"

“कहां गड़बड़ है ? ठीक तो है ।" सोना ने उसके माथे पर हाथ रखते हुए फिर जिद की।

"अच्छा, तेरे साथ छैलू कक्का चले जाएंगे। ठीक ?” "नहीं, छैलू कक्का को देखकल सभी लोग हँसते हैं। पूजा कह लही एथी तुम्हाले पापा कितने काले हैं। क्यों पाजामा कुलता पहने

लहते हैं ? हमने कहा, धत् ये मेले पापा थोड़े ही हैं । मेले पापा तो मल गए हैं। मेली मम्मी और हम गोले गोले हैं । ये तो कक्का हैं।" सोना ने पूरी समस्या कह सुनाई ।"[57]

6.2 भाषिक प्रयोग का अध्ययन:

6.2.1 उक्तियाँ- सूक्तियों का प्रयोग :

1. "औरत जात कुछ भी हो जाए, मरदों की निगाह में सिर्फ औरत ही रहती है ।"
2. "स्वयं को बुजुर्ग समझ लेने से उम्र बढ़ तो नहीं जाएगी ।"
3. "नारी से मानसिक रूप से परास्त होने पर ही पुरुष शारीरिक बल का सहारा लेता है ।"
4. “गुलाबी जाड़े की नर्म धूप सभी को अच्छी लग रही थी ।"
5. "डायन को भी दामाद प्यारा होता है ।"
6. "कल छींक आनी हैं इसलिए आज ही से मुँह खोले रखूँ ।"
7. "बुरी नजर वाले तेरा मुँह काला ।"
8. "मैं सुई हूँ क्या जो ढूँढ़ने से नहीं मिलूँगी ।"
9. "पेट के लिए हम पैदा होते हैं और उसे पालने में मर जाते हैं ।"
10. "जीने के लिए केवल भौतिक सुविधाओं की ही नहीं बल्कि जीवन-रस की जरूरत होती है। "

6.2.2 कहावत एवं मुहावरे

डॉ नीरजा जी ने अपने कथा साहित्य में पात्रों द्वारा अपनी बात करने के लिए कहावत मुहावरों का खूब उपयोग किया है उनके कुछ उदाहरण दिन में है-

1. "कोल्हू के बैल ।"
2. "फूट डालो और राज करो ।"
3. "डूबकर मोती निकालना ।"
4. "आपन जोगी जोगडा आन गाँव का सिद्ध ।"
5. घर को फूट जगत को लूट
6. "न घर का न घाट का ।"
7. "सब धान बाइस पसेरी ।"
8. "बिना आग के धुआँ नहीं उठता।"
9. "बामण कुक्कर नाऊँ, जाति देख गुर्राऊँ।"
10. "लात का भूत बात से नहीं मानता।"
11. "कहाँ राजा भोज, कहाँ गंगू तेली ।"
12. "जिसकी लाठी उसकी "

इसी तरह से डॉ. नीरजा माधव के उपन्यास व कहानियो में मुहावरों का प्रयोग उपयोगी ढंग से हुआ है -

नहले पर दहला ,गड़े मुर्दे उखाड़ना ,मन गद्गद् हो उठना, फफककर रोना, फूट-फूटकर रोना ,दुबककर बैठना, आँखें छलक पड़ना ,आत्मा तड़प उठना , आँखें भरना , गला भर आना , आँखें सजल हो उठना , मन उचट जाना ,दहाड़ मारना ,चपर चपर करना , सिर भारी होना , टस से मस न होना , तहस-नहस कर देना, जीभ पर ताला लगाना ,

हक्का-बक्का हो उठना , आग में घी डालना , जमीन-आसमान का अंतर होना , आँसू झरने लगना । आदि ।

6.2.3 गीत, लोकगीत और काव्य का प्रयोग

डॉ. नीरजा माधव ने अपनी कहानियों व उपन्यासों मे प्रसंगानुकूल व पात्र भावानुकूल गीत ,लोक गीत व काव्य का उपयोग किया है-

1. "बरसन लागी सावन बुंदियाँ.... ।"[57]
2. “गोरकी पतरकी रे, मारे करेजवा में..... ।"[58]
3. "अभी तो मैं जवान हूँ ।"[59]
4. "म्हारो घाघरो को घेर घुम्यो घुम्यो घुम्यो जाय.....।"[60]
5. "नाकटि सुवास वास यही, नैन दिए जग देखन के, तो कान दिस सुन टो पुरान, भवन दिए मन मोहन के ।"[61]
6. "बलम हो पातल मोर करिहयाँ..... ।"[62]
7. "गिरि कैडलाडस को बास हम छाड़थोड़ ।" [63]
8. " नमन करूँ मैं सद्गुरू चरणा.... ।"[64]
9. "उठ जाग मुसाफिर भोर भई...।" [65]
10. " रामहिं राम रटन करू जिभिया रे....।"[66]
11. " ऐ मेरे वतन के लोगों जरा..... ।"[67]

इस तरह डॉ. नीरजा माधव की रचनाओ में पात्रो के परिवेश व उनके स्तर के गीत, लोकगीत और काव्य का प्रयोग मिलता है।

6.2.3 डॉट पद्धति का प्रयोग

लेखिका नीरजा जी ने पात्रो के संवाद के भाव को प्रभावित करने के लिए डांट पध्दति को अपनाया है। इसके कुछ उदाहरण इस प्रकार है।

1. " छन..... छनन्..... छनन्.....छनाक।" [68]
2. ".....तो बैल अनाज खाते रहते थे..... पर वो उसका हजम नहीं होता था। "[69]
3. "लेकिन बीजी, तुम्हारी यह दशा....? तो तुम वहाँ क्या करोगी.....? खतरा है ....? "[70]
4. "नाटक..... । हत्या.....। आत्महत्या..... ।"[71]
5. कमनवा .....दरोगवा... सब मर गए हरामजादे आती हूँ तो खबर लेती हूँ. ".... सोनवा..... चल स्टोव के पास बैठ।"[72]
6. "मैंने...मैंने गुस्से में वह कागज फाड़ दिया.....बोली....क्यों अशुभ बोलते हैं.... और दूसरे ही दिन सचमुच वह अशुभ ही हो गया।"[73]
7. "ठीक है मैडम।..... एक मिनट होल्ड करिए मैडम।..... मैं प्रखर से पूछती हूँ।"[74]
8. "पर सुना है मैडम लेज्बियन है।....वी मिस रजनीसिंह, जो उनकी रिसर्च स्कालर थीं.... उसे वे बहुत मानती थीं....पर वो अपना रजिस्ट्रेशन कैन्सिल करवाकर दूसरे शहर चली गई।"[75]
9. "नो... नो..... । डोन्ट वीप.....। तुम्हारो सेंट जोसफ में एकमिशन कैसे होगा....? फादर को सुनाओगी....? कहेंगे. रिंकी.... डर्टी गर्ल.... गन्दी लड़की.... ।"[76]
10. "हाँ तो छोड़ो.....। जानते हो दिन्नू....वो....वो.... ।"[77]
11. "कब करेगी? जब पचास वर्ष की हो जाएँगी ? अरे तेरे पिताजी होते तो अब

तक कब का .... । मैं कहाँ जाऊँ.....? कोई भाई पट्टीदार....। " [78]

12. "हे भाई .... दो दिन से भूखी हूँ....रहम कर माई....एक लोंदा मक्खन देना माई ।" [79]

13. "टिकट.... एक-एक रुपए..... टिकट ....। "[80]

14. "अमुक व्यवसायी को रंगदारी वसूलने के चक्कर में गोली मारी गई .... प्रोफेसर के अपहत बेटे की गला रेतकर निर्मम हत्या.... पाँच बच्चों की माँ प्रेमी के साथ फुर्र.....अबोध बालिक के साथ दुष्कर्म....।"[81]

6.2.4 सांकेतिक भाषा का प्रयोग-

1. "अपने दरवाजे को पकड़े-पकड़े लीला कुछ देर के लिए जैस पत्थर सी निर्जीव हो गई थी ।"[82]

2. "लगभग पच्चीस छब्बीस वर्ष की श्याम वर्णा स्वस्थ और ठिगनी देहयष्टि की स्वामिनी जीरा को देखने पर बबूल के कुन्दे का भान होता था ।"[83]

3. "उसने यदि साफ इंकार कर दिया होता तो शायद एक जिंदगी इस तरह काँटो की शैय्या पर न होती ? "[84]

4. "गुलाबी रंग के पुराने ब्लाउज और सलवार के बीच साँवली सड़क की तरह सेचनी का खुला पेट दिखाई दे रहा था ।"[85]

5. "मेरे पास तो एक ही कहानी है दुलहिन, जो हारिल पंछी की तरह चौबिसों घण्टे में अपनी चोंच में दबाएँ रहती हूँ । [86]

6. "चलो भवप्रीता ! ललमुनियां और तुम । पिजरे से कब निकाल पाओगी ?"[87]

6.3 लेखन शैली

"शैली शब्द शील से बना है जिसका कोशगत का अर्थ है—चाल, ढंग, रीति, प्रणाली। साहित्यशास्त्र में शैली विशेष काव्य रचना या अभिव्यंजना पद्धति के रूप में प्रयुक्त है। अंग्रेजी में इसके लिए 'STYLE' शब्द प्रयुक्त है। अभिव्यक्त की रीति का नाम शैली है। शैली भाषा का व्यक्तिगत प्रयोग है। "[88]

अतः स्पष्ट है कि शैली का अर्थ वह तरीका है जिसके माध्यम से रचना की गई है। और की जाती है। रचनाकार अपनी कथावस्तु को पाठक के सामने कैसे प्रस्तुत करना या यह प्रस्तुतीकरण ही रचना की शैली कहलाती है । वर्तमान समय के साहित्य में प्रस्तुतीकरण मे बहुत विविधता आ गई है। हिंदी साहित्य के विशाल रचना संसार में शैली की भी बहुत विविधता पाई जाती है। शैली के महत्व के संबंध में डॉ. लक्ष्मी नारायण लाल कहते हैं कि " शैली तत्व कहानी के समस्त उपकरण के उपयोग करने की विधि है इसमें एक तरह से विधान की व्यंजना है। वस्तुतः कहानी कला में रूप विधान का चातुर्य और हस्तलाघव का सबसे बड़ा प्रमाण देना पड़ता है। एक तरह से इस कला में इसके भाव पक्ष की सफलता और उत्कृष्टता इसके कला पक्ष के अधीन है और कला पक्ष के अंतर्गत इसका शैली तत्व सबसे महत्वपूर्ण है, क्योंकि कहानी कला में हस्तलाघवका और विधानात्मक सफलता इसकी दो मुख्य शर्ते हैं।"[89]

हिंदी साहित्य में देखें तो इसमें शैली को प्रमुखता तो मिली थी है इसी से शैली रचना की सफलता का आधार बनती है । रचनाकार कथावस्तु के आधार पर शैली का चुनाव करता है, हर घटना प्रधान कथावस्तु में शैली भी अलग-अलग होती है। डॉ नीरजा माधव के कथा साहित्य में शैली के विविध प्रयोग मिलते हैं । जैसे वर्णनात्मक शैली, आत्मकथात्मक शैली, डायरी शैली, पूर्वदीप्ति शैली और पात्रात्मक शैली।

6.3.1 . आत्मकथात्मक शैली

इस शैली के अंतर्गत रचनाओं में नायक- नायिका या कोई पात्र पूरी कहानी को कहता है। वह जो देखता है महसूस करता है, वही कहानी होती है। कहानी की समस्त घटनाओं का वह साक्षी रहता है इस संबंध में डॉ अश्वनी कुमार पांडे का विचार है कि " रचनाकार ने उपन्यास को आत्मकथात्मक शैली में लिखकर पाठकों के समक्ष आत्मीयता का भाव पैदा करता लगता है।" 91

यदि घटना को बताने वाला स्वयं आंखों देखा बयान करता है तो पाठक घटना व संवाद से संबद्ध होते हैं। पाठकों को यह बहुत रुचिकर लगता है, क्योंकि आंखों देखा हाल पढ़कर उस घटना से प्रभावित होने के साथ-साथ, उस प्रसंग में वास्तविकता का आभास हो आता है। कल्पित कथा यदि पाठकों को वास्तविकता लगे तो निश्चय ही यह सफल रचना होगी और रचनाकार भी प्रतिभाशाली होगा।इस संबंध मे डॉ प्रतिज्ञा जी का मानना है कि

" साहित्यकार कथा के नायक- नायिका या किसी भी एक पात्र का स्थान स्वयं लेकर घटनाएं कहता जाता है। कथा नायक स्वयं कहानी का, उपन्यास या घटना का भोक्ता होता है। जिस कारण प्रत्येक घटना के स्थान पर उसका उपस्थित रहना आवश्यक होता है। साथ ही आंखों देखा हाल प्रस्तुत होने के कारण सारी बातें प्रमाणित, प्रभावशाली एवं वास्तविक लगती हैं। इस शैली में कथा नायक खुद को मैं इस प्रथम पुरुष में प्रस्तुत करता है।91

नीरजा जी रचनाओं में आत्मकथात्मक शैली का उपयोग हुआ है। इनके उपन्यासों व कहानियो मे पात्र आत्मकथात्मक प्रस्तुति करते हुए मिलते हैं। उपन्यास अवर्ण महिला कांस्टेबल की डायरी मे नायिका का कथन "मैं मन्त्रमुग्ध-सी सुन रही थी मुझे अच्छा लग रहा था। सत्य भी लग रहा था। लेकिन इस सत्य से परदा हटाने का जोखिम कौन ले ? अंग्रेज जाते-जाते फिर बाट गए हम सबको कौन छूने जाए संविधान को ? जो भी

आता है सत्ता में, एक कील और ठोंक जाता है बंटवारे की सलीब में, हो जाता है उसका वोट बैंक पुख्ता, कुछ प्रतिशत । कोई विरोध नहीं करता । विपक्ष भी इसलिए हल्ला नहीं मचा पाता, क्योंकि उसे भी कभी न कभी सत्ता में आने की उम्मीद तो होती है । क्यों वोट खराब करे ? बस वोटों के चक्कर में इस देश के राजनीतिज्ञ गुणा गणित करते रहते हैं ।"[92]

रात्रिकालीन संसद उपन्यास की नायिका आमोदिनी अपनी कहानी खुद कहती है । वह जो महसूस करती है वह बोलती है । एसा लगता है की लेखिका ही नायिका है । "स्नान करके बाहर निकली तो थोड़ा हलका महसूस हुआ । बालों में कंघी कर उन्हें पीठ पर छितरा लिया । लंबे गीले बालों से पानी बूंद-बूंद टपक उसकी कमर को ठंडा करने लगा तो उसने बालों के नीचे कंधे पर पीला दुपट्टा फैला लिया । ठंड अभी अधिक नहीं पड़ रही थी, पर भीगने से सिहरन होने लगी थी । शीशे के सामने खड़ी हो उसने माथे पर एक छोटी सी लाल बिंदी चिपकाई थी । सूनी माँग की ओर उसने ध्यान देना अब बंद कर दिया था ।"[93]

"कनु !"

"हूं !"

"थोड़ा सुन लो!"

" क्या?"

'कुछ लिखा है मैंने!"

"क्या है?"

'असंपृक्त कथा पुंज... आगत इतिहास...कुछ क्षणों का आत्मसर्वस्व या क्षण-क्षण अतीत बनता एक अविस्मरणीय वर्तमान...." "सुनाओ!"

"मैं ही सूत्रधार हूं इस असंपृक्त कथा पुंज की जो सत्य भी है, शिव भी है परंतु सुंदर नहीं है। शिव का हलाहल है यह। दो ही घंटों में इस गरल ने मेरे पूरे अस्तित्व को अपने वश में कर लिया है और मैं उसी के प्रभाव में कई बिखरी कहानियों को एक श्रृंखला में बांधने का प्रयास कर रही हूं। अनेक पात्र खड़े हैं मेरे सम्मुख ।"[94] (पृष्ठ संख्या उन्नीस सौ निन्यानवे)

6.3.2 वर्णनात्मक शैली

हिंदी कथा साहित्य में वर्णनात्मक शैली के अंतर्गत अधिक रचनाएं की जाती हैं । इसमें पात्र या घटना की सीधे और सरल ढंग से पाठक के सम्मुख प्रस्तुत किया जाता है । नीरजाजी के उपन्यास व कहानियों में वर्णनात्मक शैली का प्रयोग मिलता है ।

"अधिकांश कथा- साहित्य में वर्णनात्मक शैली का प्रयोग किया जाता है उपन्यासकार स्वयं या किसी पात्र के द्वारा वर्णन करते हुए कथा का विस्तार करता है । इस शैली को इतिवृतात्मक या व्याख्यात्मक शैली भी कहा जाता है । पात्रों की मनःस्थिति घटनाओं का चित्रण युगीन वातावरण को सजीव रूप से अंकित करने में यह शैली विशेष उपयुक्त होती है । इस शैली के कारण कथावस्तु में प्रवाहात्मकथा आती है ।"[95]

यमदीप उपन्यास वर्णनात्मक शैली मे लिखा गया है एक उदाहरण –

“सामने कच्चे ओसारे में महताब गुरु अपनी चौकी से उतरकर मुर्गियों के दरबे की ओर जा रहे थे नाजबीबी सोना को लिए उनकी ओर बढ़ चली। चेलों के कहने के बाद भी गुरुजी ने आज तक अपना घर पक्का नहीं बनवाया। मिट्टी की दीवार पर खपरैलवाली एक कोठरी जिसमें कोई खिड़की न होने के कारण दिन-भर अंधेरा रहता था। उसी में एक किनारे राशन-पानी के दो-तीन टिन और बरतन, कोने में स्टोव और माचिस । बगल में एक चारपाई पर पैताने की ओर मोड़कर रखी पुरानी रजाई और कथरी चारपाई के ठीक ऊपर, अगल-बगल की दीवारों पर गड़ी लकड़ी की खूंटियों में इस पार से उस पार तक बंधी रस्सी, जिस पर

कई नई पुरानी साड़ियां बेतरतीब ढंग से लटकती रहतीं। चारपाई के नीचे एक पुराना टिन का बक्सा, जिसमें चेलों की प्रतिदिन की कमाई का एक हिस्सा सुरक्षित रखा जाता कोठरी के ठीक सामने वाली दीवार पर बुचरा माता की शीशे के फ्रेमवाली तसवीर लटकती रहती ताकि दरवाजा खुलने पर बाहर की रोशनी में उनका दर्शन हो सके। इसी कोठरी के सामने खुले ओसारे में महताब गुरु की लकड़ी की चौकी थी, जिस पर वे गरमी और बरसात में सोते हैं और सामने उफनती रीतती नदी को देखा करते हैं।"[96]

ईहामृग उपन्यास मे वर्णनात्मक शैली मे लिखा गया है । "काशी के बारे में प्रचलित है कि यह भगवान् शिव की नगरी है । उनके त्रिशूल पर बसी काशी । इसीलिए शायद शिव का फक्कड़पन और अभाव में भी आनन्द यहाँ की विशेषता है । ऐसा नहीं है कि मैं एकतरफा दृष्टि रखकर इस नगर को देख रही हूँ ? शिव के जीवन का हालाहल और कौपीन-वैभव भी दिखाई पड़ा है मुझे, पर वह आपा-धापी और यान्त्रिकता नहीं दिखाई देती जो किसी भी महानगर या मेरे देश की आज विशेषता है । इसीलिए पूरे विश्व के भूगोल से पृथक मानी जाती है । यह नगरी ।"[97]

खून को लेकर मनोरम वर्णन कहानियो से एक उदाहरण-

"कितना खूबसूरत रंग होता है खून का बिल्कुल चटक और इस खूबसूरती को प्रकृति ने सभी प्राणियों में एक सा ही दिया है, परन्तु कितनी विचित्रता है इस रंग की कि बाहर रहने पर समान दीखने वाला यह रक्त शरीर में कैद होते ही न जाने किन-किन बन्धनों में बँध संकुचित हो उठता है। धर्म, जाति, सम्प्रदाय, वर्ग, न जाने कितने नामों और उपनामों में बँट जाता है यह खून।" [98]

6.3.3 पूर्वदीप्ति शैली:

इस शैली को फ्लैशबैक शैली भी कहा जाता है । इसमें पात्र अतीत की स्मृतियों में खो जाता है और उन संदर्भों से आगे की कथावस्तु को पात्र अपनी स्मृति के सहारे तत्कालीन स्थित व घटना को बताने लगता है । “लेखक जब अपने कथावस्तु को अतीत की घटनाओं से जोड़ना चाहता है । तब फ्लैशबैक शैली अर्थात पूर्व दीप्ति शैली का प्रयोग किया जाता है । कोई भी पात्र जब अतीत की सुखात्मक व दुखात्मक स्मृतियों में खो जाता है । अतीत की स्मृति या घटना उस के आंखों के सामने तैरने लगती है । उसे पूर्वाभास या पूर्वदीप्ति शैली कहते हैं । इसी शैली के कारण पाठक पात्र के अतीत से परिचित हो जाता है । साथ ही पात्र के भूतकाल से परिचित होने के कारण उसकी वर्तमान स्थिति को समझने में भी पाठक को आसानी होती है।"[99]

नीरजाजी ने तेभ्य:स्वधा उपन्यास नायिका मीना जो की अपने बेटे को अपने जीवन संघर्ष की कथा को पूर्वादीप्ति शैली मे बताती है ।

“अपने बेटे को बताते-बताते विभाजन का दृश्य सजीव हो उठा था- 'अगस्त में विभाजन होने के बाद ही कबाइलियों के छद्मवेश में पूरे " कश्मीर पर आक्रमण हुआ था। अक्तूबर के दूसरे सप्ताह तक लगभग पाँच हजार सशस्त्र कबाइली कश्मीर में घुस आए थे ये बर्बर घुसपैठिए मुजफ्फराबाद तिथवल इलाके में भी घुसे, जम्मू-कश्मीर में कोहाला के रास्ते आए। दूसरा रास्ता अखनूर के रास्ते से जम्मू का छंब-राजौरीवाला है। इसी राजौरी की घाटी में हम सब शरण लिये हुए थे। हमलावरों का काफिला राजौरी-छंब से आया। तुमको यह बता दूँ कि इन जिहादी फौजों यानी मुजाहिदों की छावनियाँ कोहाट घाटी रावलपिंडी, सरगोधा, झेलम, गुज्जर खाँ, चकअमरू, बाधा, लाहौर जैसी जगहों पर थीं और यहीं से हमलावरों के रूप में आए थे।”[100]

6.3.4 फ्लैशबैक शैली

तेभ्य:स्वधा उपन्यास की लेखन शैली के संबंध मे डॉ सत्यपाल शर्मा की कहते है की “फ्लैशबैक के साथ इस उपन्यास मे संवादो का बेहतरीन इस्तेमाल किया गया है। इस उपन्यास मे घटनाएं कम है , लेकिन वे घटनाएं महत्वपूर्ण है । घटनाओ का प्रभाव ज्यादा है। घटनाओ से ज्यादा महत्वपूर्ण उनका प्रभाव है।”[101]

फ्लैशबैक शैली का एक उदाहरण ‘शीर्षक क्या दुँ ?’ कहानी की नायिका हरीतिमा का एक उदाहरण -

“पर क्या कहूँ अपनी इन दोनों सहेलियों को जिन्होंने आज पुनः कलम पकड़वा दिया हाथों में वास्तव में इस कथा को तो सुदेशना नाय को लिखना चाहिए था। सुदेशना, मेरी सहेली। पढ़ते समय से ही लेखिका बनने के आकर्षण से मोहाविष्ट इसी मोह ने आज उसे अपनी मंजिल तक आखिर पहुंचा ही दिया। सुदेशना एक 'बोल्ड' लेखिका के रूप में प्रान्तीय स्तर कर काफी चर्चित है। राष्ट्रीय स्तर तक चर्चित हो जाने के लिए पूरी तरह प्रयासरत और आशान्वित मी बस एक क्रान्तिकारी कथा संग्रह के प्रकाशित हो जाने भर की देर को किसी तरह समायोजित करती हुई लेखन की तरह ही अपने जीवन में भी बहुत 'बोल्ड'। पता नहीं इस 'बोल्डनेस' का हिन्दीकरण मुझे क्यों नहीं सुहाता ?”[102]

6.3.5 पत्रात्मक शैली

पत्रात्मक शैली में लेखन अपने पात्रों को पत्र के माध्यम से कथावस्तु में शामिल करता है। लेखक का कौशल है कि पत्र के माध्यम से प्रस्तुत यह पात्र का चरित्र चित्रण भी पाठक के मन में कर देता है।

" कथा साहित्य में आजकल पत्रात्मक शैली का भी प्रयोग किया जाने लगा है। इस शैली की सहायता से लेखक पात्रों के भावों को प्रभावी रूप से व्यक्त कर पाता है। जहां वार्तालाप संभव नहीं हो पाता या पात्रों के लिए अपनी अनुभूतियों को कहना संभव

नहीं होता वहां वे लेखनी का उपयोग करते हैं। अर्थात पत्र लिखकर अपने भाव व्यक्त करते हैं।" [103]

1. **गेशेजम्पा उपन्यास से एक उदाहरण -**

"ल्हासा

टेलो

मेरे हृदय के टुकड़े जम्पा !

18वीं तारीख

अप्रैल

प्यार ! इतने दिन कैसे बीते, लिख नहीं सकता। बस इतना ही कहूंगा कि आ जाओ बेटा तुम्हारी मां कुछ दिनों की मेहमान है। .....यहां के अधिकारी अब इस शर्त पर भी मान गए हैं कि यदि तुम यहां आकर शांतिपूर्वक जीवन बिताओ और राष्ट्र-विरोधी गतिविधि में सम्मिलित न होओ तो वे हमें जेल से मुक्त कर देंगे और चैन की जिंदगी जीने देंगे।

अपने जीवन के बचे-खुचे दिन तुम्हारे साथ बिताना चाहता हूं। शायद मां भी कुछ दिन और जी सके। तिल-तिल बुझ रही है जीवन की बाली बेटा। आ जाओ वापस ।

तुम्हारा पिता

थुपतेन"[104]

1. **हवाओ पर लिखी पाती कहानी से नायक द्वारा लिखा गया एक पत्र**

"प्रिय शुभांगी

स्नेह!

18.6.99

तुम्हारे लिए में अजनबी हूँ, लेकिन मेरे लिए तुम नहीं। कारण, माँ ने तुम्हारी फोटो मेरे पास भेज दी है। तुम्हारी आँखें बहुत सुन्दर हैं। बड़ी-बड़ी, खोई-खोई-सी किसे

ढूँढती रहीं अब तक? क्या मुझे? यदि हाँ, तो अभी मत मानना कि मैं तुम्हें मिल गया। क्योंकि इसका निर्णय इस युद्ध के बाद ही हो सकेगा। .....इन पहाड़ियों में तुम्हारे पत्र की तो कोई उम्मीद नहीं है, लेकिन एक- तरफा वादा तुमसे ले रहा हूँ। तुम्हारा सम्बल बनने के लिये जीवित रहा तो जरूर बनूँगा, अन्यथा तुम कोई दूसरा.... । बस युद्ध समाप्त होने तक मेरी प्रतीक्षा अवश्य कर लेना। करोगी न प्रतीक्षा। बस-

तुम्हारा अपना,

कार्तिकेय"[105]

6.3.6 डायरी शैली

डायरी शैली में लेखक अपने नायक - नायिका के द्वारा दिनभर की क्रियाकलाप को शाम को डायरी में अभिव्यक्त करके कथा की रचना करता है । उसी पात्र की डायरी के माध्यम से रचना की कथावस्तु चलती है ।

" आधुनिक साहित्यकार पात्र की मन:स्थिति प्रकट करने के लिए डायरी शैली का प्रयोग करने लगे हैं । डायरी व्यक्ति का निजी दस्तावेज होता है । उसमें व्यक्ति उन्हीं बातों को लिखता है जिन्हें वह किसी के सामने प्रकट नहीं करता है । निजी बातों का लेखा-जोखा डायरी में होने के कारण व्यक्ति के अंतर्मन को समझने में डायरी से सहायता मिलती है । उपन्यासकार भावों के प्रकटीकरण के लिए डायरी शैली का प्रयोग करता है इसकी सहायता से पात्रों के मन में चल रही खलबली स्पष्ट होती है ।"[106]

इस प्रकार कहा जा सकता है कि नीरजा माधव के कथा साहित्य मे शैली की विविधता का प्रावधान है । वस्तु के आधार पर रचना में शैली का प्रयोग हुआ है ।

देनपा तिब्बत की एक डायरी इसी शैली मे लिखी गया उपन्यास है यथा -

1.

"27 नवंबर

आज तुम्हारा फोन आया देवयानी तो लगा इस लम्हे को पूर्णता से जी लूँ या समेटकर सुरक्षित रख लूँ इन बर्फीली हवाओं में। जब- जब कोई घाव कुरेदा जाएगा, उसकी जलन को मिटाने के लिए यह लम्हा ठंडा लेप होगा।

बहुत अधिक बातें नहीं कर सकता था। यहाँ से छनकर तुम तक जाती होंगी। हमारे-तुम्हारे बीच हिमालय तना खड़ा है।" [107]

2.

"28 नवंबर

आज सेरा-जे गोनपा गया था। आजीविका के लिए कुछ करना जरूरी है। रखे हुए पैसे बहुत दिन काम नहीं आएँगे। भारत से लेकर यहाँ की जाँच चौकियों और जेल अधिकारियों के सभी कागजात साथ थे। मेरा उद्देश्य साफ था।" [108]

2.

अवर्ण महिला कान्सटेबल की डायरी उपन्यास पूर्णरूप से डायरी शैली मे लिखा गया है । यथा

"23 मार्च

आज शाम ड्यूटी चार्ट देखने गई। ज्ञानवापी कन्ट्रोल रूम में हेड कांस्टेबल दलपतराम ही सबकी ड्यूटी लगाता है। कई बार मैंने अनुरोध किया कि सम्भव हो तो रात वाली पाली में मेरी ड्यूटी न लगाए लेकिन वह नहीं मानता। अकसर लगा देता है शाम चार बजे से बारह बजे रात तक ड्यूटी से छूटने के बाद कुलगंज तक पहुंचने में रात के एक दो बज जाते हैं। कभी-कभी आटो नहीं मिलता है तो पैदल ही बेनिया बाग से आगे तक चली आती हूँ। वर्दी के कारण सुरक्षित तो रहती हूँ सड़क पर लेकिन शरीर थककर चूर-चूर हो जाता है ।"[109]

लेखिका डॉ नीरजा माधव ने अवर्ण महिला कान्सटेबल की डायरी उपन्यास मे वयं स्वीकार किया है ।

"अवर्ण महिला कांस्टेबल की डायरी" मैंने नहीं बल्कि भवप्रीता आर्या ने मेरी कलम की नोक पर बैठकर लिखवा लिया। यदि मैं लिखती तो एक सजग साहित्यकार की तरह पहले दलित विमर्श के चार-छह अति प्रचलित मुहावरों और मानकों का अध्ययन करती, उन्हें आधुनिक फैशन के साहित्य के चौखटे में बाँधा और फिर सहानुभूति की थाली में सजाकर पाठकों के सामने प्रस्तुत करने का प्रयास करती। यह समय ऐसे ही सधे हुए सजग साहित्यकारों का है। लेकिन क्या करूं? यह भवप्रीता बहुत निष्ठुर है। मेरी लेखनी के प्रति ही नहीं, अपने प्रति भी बड़ी निर्ममतापूर्वक वह अपने समाज का भी साक्षात्कार करती है और लगे हाथों विश्व समाज का भी। मैं चुपचाप बस उसका मुँह निहारती हूँ, एक आशुलिपिक की भाँति । कभी उसके अन्तर्मन के भाव शब्दों में मुखरित हो जाते हैं तो कभी उसके अन्तर्द्वन्द्र की भाषा आँखों से पढ़ने का प्रयास करती हूँ मैं ।"[110]

प्रतिभाशाली व प्रगतिशील लेखिका नीरजा माधव की कहानी व उपन्यासों मे विबिध शैली का सार्थक प्रयोग हुआ है । इसी कारण से हिन्दी साहित्य जगत मे इन्हे इतनी ख्याति मिली है , इनके रचनाओ के पात्र व संवाद कथावस्तु के अनुरूप होते है । कथावस्तु की बुनावट एसी होती है की पाठक को बंधे रखती है । नीरजा जी के साहित्य का विषय हमेशा ही अलग रहा है वे साहित्य मे उन सभी बिषय पर लिखाना चाहती है जो अभी तक अनछूया रहा गया है । अर्थात विषय की विविधता नीरजा जी के साहित्य का मूल गुण है । लेखिका के उपन्यासो के शिल्प के संबंध मे डॉ जितेंद्र नाथ कहते है कि "शिल्प कि दृष्टि से भी यह कृति प्रशंसनीय है । सम्पूर्ण उपन्यास का पूरा खाका बड़ी स्पष्टता के साथ मन के पृष्ठो पर अंकित कर चुकाने के बाद कदाचित उपन्यास का लेखन शुरू किया गया है । इसलिए विविध प्रसंगो कि भावधारा के अनुरूप भाषा की प्रवाहमयता सुनिश्चित हुई है

। कही- कही किसी स्तर पर कृतिमता नही दिखाई पड़ती । अत्यंत सहजता,स्वाभाविकता , अनौपचारिक एवं आत्मीयता के साथ अमीना की यह जीवन कथा कही गयी है ।"[111]

सन्दर्भ

1. हिंदी उपन्यास- शिल्प और प्रयोग, डॉ. त्रिभुवन सिंह, पृष्ठ. 240

2. हिंदी उपन्यास रचना विधान और युगबोध, बसंती पंत, पृष्ठ. 27

3. नीरजा माधव की कहानियो मे मध्यवर्ग, डॉ अनिल प्रभाकर कांबले, पृष्ठ 232

4. नीरजा माधव सृजन के आयाम, डॉ बृजबाला सिंह, पृष्ठ. 43

5. अवर्ण महिला कान्स्टेबल की डायरी, नीरजा माधव, पृष्ठ. 84

6. वही, पृष्ठ. 11

7. वही, पृष्ठ. 69

8. रात्रीकालीन संसद, नीरजा माधव, पृष्ठ. 8

9. इहामृग, नीरजा माधव, पृष्ठ. 19

10. अभी ठहरो अंधी सदी, नीरजा माधव, पृष्ठ.102

11. वही, पृष्ठ. 102

12. वही, पृष्ठ.106

13. वही, पृष्ठ. 118

14. अभी ठहरो अंधी सदी, नीरजा माधव, पृष्ठ.101

15. आदिम गंध तथा अन्य कहानियाँ, नीरजा माधव, पृष्ठ. 99

16. वही, पृष्ठ.63

17. पथदंश, नीरजा माधव, पृष्ठ. 87

18. वाया पांडे पुर चौराहा,नीरजा माधव, पृष्ठ. 61

19. पथदंश, नीरजा माधव, पृष्ठ. 103

20. चिटके आकाश का सूरज, नीरजा माधव, पृष्ठ. 56

21. अवर्ण महिला कान्स्टेबल की डायरी, पृष्ठ. 54

22. तेभ्यः स्वधा, नीरजा माधव, पृष्ठ. 60

23. रात्रीकालीन संसद, पृष्ठ. 102

24. प्रेम संबंधो की कहानियाँ (चिटके आकाश का सूरज), नीरजा माधव, पृष्ठ. 28
25. अभी ठहरो अंधी सदी, पृष्ठ. 1
26. वही, पृष्ठ. 57
27. वही, पृष्ठ.157
28. वही, पृष्ठ.156
29. पथदंश, पृष्ठ.24
30. वही, पृष्ठ. 28
31. वही, पृष्ठ.103
32. चुप चंतारा रोना नहीं, नीरजा माधव, पृष्ठ.15
33. वही, पृष्ठ. 86
34. वही, पृष्ठ. 130
35. प्रेम संबंधो की कहानियाँ, नीरजा माधव,पृष्ठ. 157
36. वाया पांडे पुर चौराहा, पृष्ठ.25
37. वही, पृष्ठ.43
38. वही, पृष्ठ.101
39. प्रेम संबंधो की कहानियाँ, पृष्ठ. 36
40. अभी ठहरो अंधी सदी , पृष्ठ. 12-13
41. अभी ठहरो अंधी सदी, (साझ से पहले) पृष्ठ. 78
42. अभी ठहरो अंधी सदी, (लडाई जारी है), पृष्ठ. 126
43. अभी ठहरो अंधी सदी, (फुन्नो के दारजी), पृष्ठ. 17
44. अभी ठहरो अंधी सदी, (एरियर), पृष्ठ. 144
45. पथदंश, पृष्ठ. 18

46. पथदंश(किवाड़ के बिना), पृष्ठ. 98

47. पथदंश (पुत्रोऽहम) पृष्ठ. 144

48. चुप चंतारा रोना नहीं, पृष्ठ. 46

49. प्रेम संबंधो की कहानियाँ, पृष्ठ. 88

50. प्रेम संबंधो की कहानियाँ (देश के लिए), पृष्ठ. 91

51. वाया पांडेपुर चौराहा ,पृष्ठ.19-20

52. वही, पृष्ठ. 60-61

53. ईहामृग, पृष्ठ. 41-42

54. यमदीप, पृष्ठ. 26-27

55. वही, पृष्ठ. 56

56. वही, पृष्ठ. 79

57. आदिम गंध तथा अन्य कहानियाँ, पृष्ठ. 94

58. चुप चंतारा रोना नहीं, पृष्ठ. 85

59. वही, पृष्ठ.85

60. वही, पृष्ठ. 115

61. वही, पृष्ठ. 134

62. वही, पृष्ठ.134

63. प्रेम संबंधो की कहानिया, पृष्ठ. 132

64. वही, पृष्ठ. 133

65. वाया पांडेपुर चौराहा, पृष्ठ. 17

66. वही, पृष्ठ. 23

67. वही, पृष्ठ.193

68. अभी ठहरो अंधी सदी, पृष्ठ. 7

69. वही, पृष्ठ.15

70. वही, पृष्ठ.20

71. वही, पृष्ठ.27

72. वही, पृष्ठ.44

73. वही, पृष्ठ.72

74. वही, पृष्ठ.102

75. वही, पृष्ठ.107

76. वही, पृष्ठ.124

77. वही, पृष्ठ.135

78. आदिम गंध तथा अन्य कहानियाँ, पृष्ठ. 67

79. पथदंश, पृष्ठ. 67

80. वही, पृष्ठ. 93

81. वही, पृष्ठ. 73

82. चिटके आकाश का सूरज, पृष्ठ. 48

83. वही, पृष्ठ. 55

84. वही, पृष्ठ. 98

85. अभी ठहरो अंधी सदी, पृष्ठ. 2

86. आदिम गंध तथा अन्य कहानियाँ, पृष्ठ.109

87. अवर्ण महिला कांस्टेबल की डायरी, पृष्ठ. 48

88. मृणाल पांडे के कथा साहित्य का शिल्प विधान, डॉ अमित भाई नरोत्तम भाई पटेल, पृष्ठ 165

89. हिंदी कहानियों की शिल्प विधि का विकास, डॉ लक्ष्मी नारायण लाल, पृष्ठ. 350

90. डॉ शिव प्रसाद सिंह उपन्यास कथ्य और शिल्प, डॉ अश्वनी कुमार, पृष्ठ. 162

91. डॉ शिवप्रसाद सिंह कथा साहित्य में शिल्प विधान,डॉ प्रतिज्ञा पतकी, पृष्ठ. 87

92. अवर्ण महिला कांस्टेबल की डायरी, पृष्ठ. 41

93. रात्रीकालीन संसद , पृष्ठ. 55

94. वाया पांडेपुर चौराहा (पृष्ठ संख्या उन्नीस सौ निन्यानबे), पृष्ठ.193

95. डॉ शिव प्रसाद सिंह के कथा साहित्य में शिल्प विधान, पृष्ठ. 89

96. यमदीप, पृष्ठ. 25

97. ईहामृग , पृष्ठ. 35

98. प्रेम संबंधों की कहानियाँ , पृष्ठ. 13-14

99. डॉ शिव प्रसाद सिंह के कथा साहित्य में शिल्प विधान, पृष्ठ. 92

100. तेभ्यः स्वधा, पृष्ठ. 37

101. सृजन के आयाम नीरजा माधव ,डॉ बृजबाला सिंह, पृष्ठ. 43

102. शीर्षक क्या दूँ ?, प्रेम संबंधों की कहानियाँ, पृष्ठ. 15

103. डॉ शिव प्रसाद सिंह के कथा साहित्य में शिल्प विधान, पृष्ठ. 94

104. गेशेजम्पा, पृष्ठ. 126-127

105. प्रेम संबंधो की कहानियाँ, हवाओं पर लिखी पाती, पृष्ठ. 59

106. डॉ शिव प्रसाद सिंह के कथा साहित्य में शिल्प विधान, पृष्ठ. 94

107. देनपा तिब्बत की ड़ायरी, पृष्ठ. 37

108. वही, पृष्ठ. 37

109. अवर्ण महिला कान्स्टेबल की डायरी, पृष्ठ. 43

110. वही, पृष्ठ. 7

111. नीरजा माधव : सृजन के आयाम, पृष्ठ. 33